



# RAJASTHAN

## JUNIOR ACCOUNTANT

प्रथम प्रश्न पत्र

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग – 3



हिन्दी एवं गणित



# RAJASTHAN JR. ACCOUNTANT

## CONTENTS

हिन्दी		
क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	संज्ञा	1
2.	सर्वनाम	3
3.	विशेषण	4
4.	क्रिया	5
5.	संधि	12
6.	समास	28
7.	उपसर्ग	34
8.	प्रत्यय	44
9.	पर्यायवाची	52
10.	विलोम शब्द	54
11.	वाक्य के लिए एक शब्द	60
12.	शब्द युग्म	66
13.	एकार्थी शब्द	76
14.	मुहावरे	83
15.	लोकोक्ति	89
16.	वर्तनी शुद्धि एवं वाक्य-शुद्धि	92

17.	संयुक्त सरल एवं मिश्र वाक्यों का हिंदी रूपांतरण एवं हिंदी वाक्यों का अंग्रेजी में रूपांतरण	
18.	कार्यालयी पत्र/सरकारी पत्र	
<b>गणित</b>		
1.	संख्या पद्धति (Number System)	106
2.	सरलीकरण (Simplification)	113
3.	औसत (Average)	117
4.	अनुपात एवं समानुपात (Ratio & Proportion)	121
5.	प्रतिशतता (Percentage)	125
6.	लाभ – हानि (Profit & Loss)	129
7.	साधारण ब्याज (Simple Interest)	134
8.	चक्रवृद्धि ब्याज (Compound Interest)	137
9.	चाल, समय और दूरी (Speed, Time & Distance)	140
10.	समय और कार्य (Time & Work)	144
11.	बारम्बारता बंटन	147
12.	सांख्यिकी (केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप) (Statistics)	155
13.	डाटा इंटरप्रिटेशन (Data Interpretation)	161

# प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

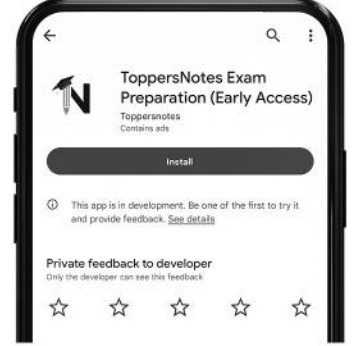
नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करें।  
ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखें :-



ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।



टॉपर्सनोट्स  
एग्जाम प्रिपरेशन ऐप



टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।



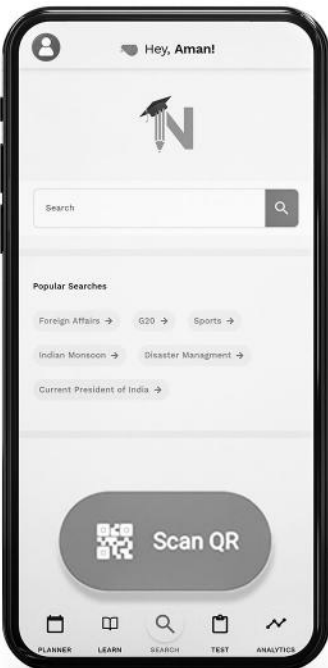
लॉग इन करने के लिए अपना मोबाइल नंबर दर्ज करें।



अपनी परीक्षा श्रेणी चुनें।



सर्च बटन पर क्लिक करें।



SCAN QR पर क्लिक करें।



किताब के QR कोड को स्कैन करें।



• सोल्युशन वीडियो  
• डाउट वीडियो  
• कॉन्सेप्ट वीडियो



• अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री



• विषयवार अभ्यास  
• कमजोर टॉपिक विश्लेषण



• रैंक प्रेडिक्टर  
• टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए  
[hello@toppersnotes.com](mailto:hello@toppersnotes.com) पर मेल करें  
या [766 56 41 122](tel:7665641122) पर whatsapp करें।

हिंदी

## संज्ञा

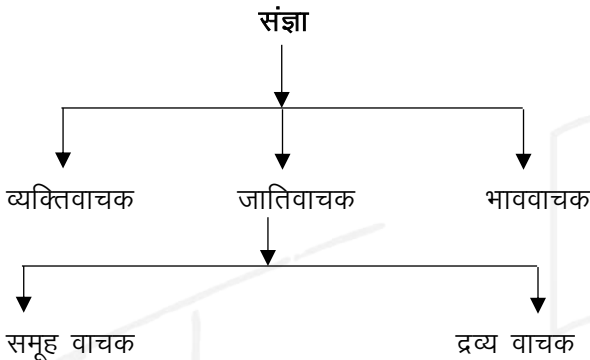
### परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते हैं।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।



### संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं –



**1. व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

- व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नहीं।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओं, समाचार-पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।



**2. जातिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु-पक्षियों, फल-फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्दा



हनुमानगढ़, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड	रोड, सड़क

**3. भाववाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।



- प्रायः गुण-दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती है।
  1. जातिवाचक संज्ञा से
  2. सर्वनाम से
  3. विशेषण से
  4. क्रिया से
  5. अव्यय से

### जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढ़ापा
पुरुष	पुरुषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

### विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता

गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

#### क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

#### अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिवकार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़े शब्द भाववाचक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।  
जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन  
कारण कृ + अन

- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा** – ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा** – किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।

**नोट** – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

**आजाद** – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।

**सरदार** – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़ने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

**गाँधी** – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरु किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।

**जैसे –**

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

## सर्वनाम

**परिभाषा** – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।



- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।  
जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

**सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं**

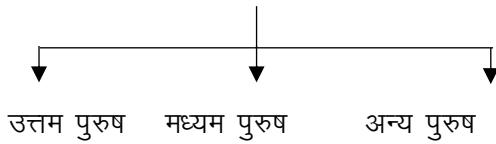
1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहने वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।



**पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है**

### पुरुषवाचक सर्वनाम



- (i) **उत्तम पुरुष** – बोलने वाला / लिखने वाला  
जैसे – मैं, हम, हम सब।
- (ii) **मध्यम पुरुष** – श्रोता / सुनने वाला  
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।
- (iii) **अन्य पुरुष** – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारे में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।  
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. **निश्चय वाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।



पास की वस्तु के लिए – यह  
दूर की वस्तु के लिए – वह

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में निश्चितता का बोध नहीं होता है। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।



जैसे – कोई

- सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
- रमन को कोई बुला रहा है।
- दूध में कुछ गिरा है।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम** – दो उपवाक्यों के बीच आकर सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।



जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।  
जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।



जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?

कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. **निजवाचक सर्वनाम** – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।



जैसे – आप, स्वयं, खुद।  
जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।

सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।

- (i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
- (ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
- (iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति में परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।



## विशेषण

### परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।

जैसे – छोटा जादूगर करतब दिखा रहा है।  
यहाँ छोटा शब्द विशेषण है तथा जादूगर विशेष्य (संज्ञा) है।

**विशेष** – विशेषण की पहचान का तरीका किसी भी वाक्य में कैसा/कैसी/कैसे अथवा कितना/कितनी/कितने शब्दों से प्रश्न किये जाने पर इसके उत्तर के रूप में जो कोई भी शब्द लिखा जाता है। यह विशेषण माना जाता है।

जैसे –

- (i) अंकित कैसा लडका है ?  
उत्तर – अंकित अच्छा/बुरा/भला/शैतान/चंचल लडका है।
- (ii) हरी तुम्हारे पास कितनी गायें है ?  
उत्तर – मेरे पास पाँच/दस/सौ/हजारों गाये है।

**विशेषण के भेद** – विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते हैं।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण

### 1. गुणवाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ के रंग, रूप, गुण, दोष, आकार, दशा, स्थिति, स्थान, काल, समय, आदि की विशेषता को प्रकट करते हैं, वहाँ गुणवाचक विशेषण माना जाता है।

जैसे – कृष्णमृग, सुन्दर बालिका, भले लोग, गंदी बस्ती, बड़ा लडका, पुराना मकान आदि।

### 2. संख्यावाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द किसी पदार्थ की संख्या को प्रकट करे। एक, दूसरी, चौगुनी, दोनों, शतक, दर्जनों, अनेक आदि।

### 3. परिमाण वाचक विशेषण

ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ में मात्रा को प्रकट करते हैं उनमें परिमाण वाचक विशेषण माना जाता है।

जैसे – दो लीटर तेल, हजार टन गेहूँ, थोड़ा सा पानी

### 4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे – (i) यह किताब मेरी है। (ii) वह लडका खाना खा रहा है। (iii) जो लोग मेहनत करते हैं वे अवश्य अपनी मंजिल पाते हैं।

### विशेषण के अन्य भेद

- (i) व्यक्तिवाचक विशेषण
- (ii) भिन्नतावाचक विशेषण

**विशेषण की अवस्थाएँ** – 3 होती हैं।

- (i) **मूलावस्था** – जो विशेषण शब्द अपने मूल रूप में लिखा जाता है।  
जैसे – अतुल एक अच्छा लडका है।
- (ii) **उत्तरावस्था** – जब कोई विशेषण शब्द दो पदार्थों की तुलना करने के लिए प्रयुक्त होता है।  
जैसे – (i) गंगा यमुना से पवित्र नदी है।  
(ii) मानसी पटुतर लडकी है।

**पहचान** – जब किसी विशेषण शब्द से पहले 'से' शब्द लिखा हो अथवा विशेषण के बाद 'तर' प्रत्यय जुड़ा हो तो वहाँ उत्तरावस्था मानी जाती है।

(iii) **उत्तमावस्था** – जब कोई विशेषण शब्द अनेक पदार्थों में से किसी एक को चुनने में काम आता है, वहाँ उत्तमावस्था मानी जाती है।

**पहचान** – जब विशेषण शब्द से पहले सबसे शब्द या विशेषण के बाद तम/इष्टा/तरीन प्रत्यय लगा हो वहाँ उत्तमावस्था होगी।

- जैसे – (i) स्नेहा कक्षा की पटुतम बालिका है।  
(ii) नवीन सबसे अच्छा लडका है।  
(iii) विद्यालय में व्यवस्थाएँ बेहतरीन है।

### प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो किसी विशेषण की भी विशेषता को प्रकट करते हैं, वे प्रविशेषण कहलाते हैं।

- जैसे – (i) वह बहुत तेज दौड़ता है।  
(ii) अवनी अत्यंत सुंदर बालिका है।

## क्रिया

- वाक्य में जिस शब्द या शब्द-समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं, जैसे – खाना, पीना, पढ़ना, सोना, जाना।
- क्रिया का अर्थ हैं करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता है। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से होती

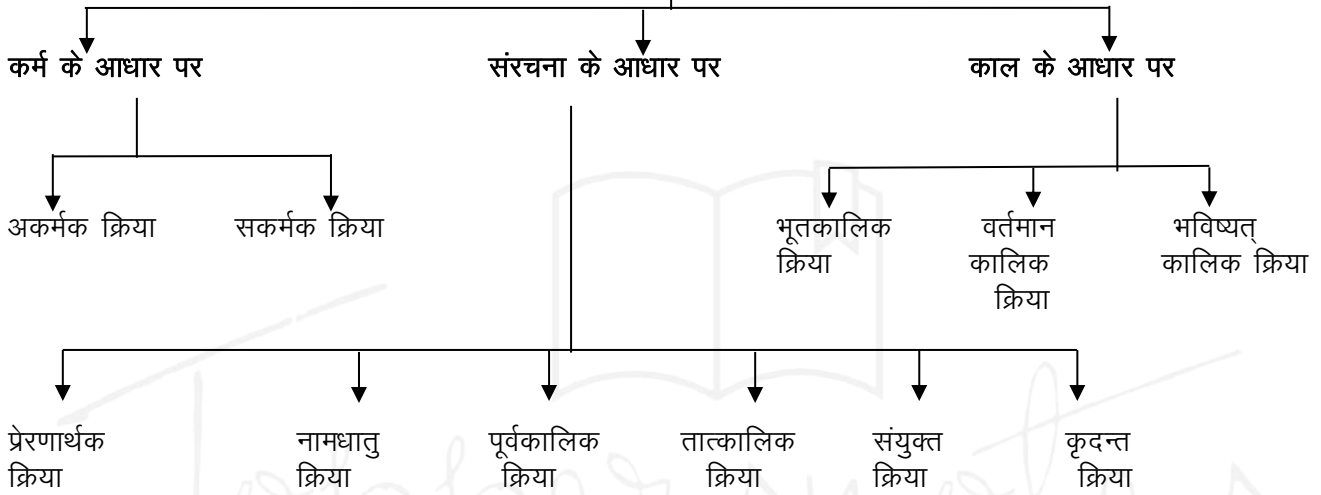


हैं। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत हैं तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।

- धातु – हिंदी क्रिया पदों का मूल रूप ही 'धातु' है। धातु में 'ना' जोड़ने से हिंदी के क्रिया पद बनते हैं।  
जैसे – पढ़ + ना = पढ़ना, उठ + ना = उठना।
  - मोहन खाना खा रहा है।
  - हवा बह रही है। (करना-हवा बहने की क्रिया कर रही है।)
  - पुस्तक अलमारी में है। (होना)

उपर्युक्त वाक्यों में 'खा रहा है' 'बह रही है' क्रियापद है।

### क्रिया के भेद



### वाक्य में कर्म की संभावना के आधार पर भेद

**अकर्मक और सकर्मक क्रिया** – किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद हैं – सकर्मक और अकर्मक।

### (क) अकर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर केवल कर्ता पर ही पड़ता है अर्थात् जिस क्रिया के करने में कर्म की आवश्यकता ही नहीं होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे –

- रमा सोती है।
- नरेश दौड़ रहा है।
- चिड़िया उड़ रही है।
- बच्चा रोता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'सोती है', 'दौड़ रहा है', 'उड़ रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः रमा, नरेश, चिड़िया और बच्चा कर्ता-पदों



पर ही पड़ता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती हैं।

**अकर्मक क्रिया को भी पुनः दो भेदों में बाँट दिया जाता है।**

(i) **अपूर्ण अकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया के साथ किसी कर्म की तो आवश्यकता नहीं होती पर किसी पूरक शब्द की आवश्यकता होती है। वह अपूर्ण अकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

**नोट – लगना, होना, निकलना** ये अपूर्ण अकर्मक क्रिया को प्रदर्शित करने वाली क्रियाएँ हैं।

**जैसे –**

- भेड़ प्यासी थी।
  - मैं एक छात्र हूँ।
  - वह बड़ा ईमानदार निकला।
  - वह डरावना लगता है।
- होना
- लगना, निकलना

**(ii) पूर्ण अकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया के साथ कर्म व पूरक शब्द दोनों की आवश्यकता न हो, वह पूर्ण अकर्मक क्रिया कहलाती है।

**जैसे –**

- कोयल कूक रही है।
- बच्चा रो रहा है।
- तोता आसमान में उड़ता है।

**नोट** – पूर्ण अकर्मक क्रिया में क्या शब्द से प्रश्न किए जाने पर कोई भी काल्पनिक उत्तर नहीं निकलता है।

**(ख) सकर्मक क्रिया**

जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया में कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकती, जैसे –

1. राम पत्र लिखता है।
2. लडके ने बेर खाए।
3. मोहित पानी पीता है।
4. अध्यापक प्रश्न पूछते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न कर्मपदों पर पड़ रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ हैं। सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या', 'किसको' लगाकर प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है? (पत्र), लडके ने क्या खाए? (बेर), मोहित ने क्या पिया? (पानी)।

**(i) अपूर्ण सकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया के साथ कर्म के अलावा भी किसी पूरक शब्द की आवश्यकता बनी रहती है, तो वहाँ अपूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती है।

**जैसे –**

- हमने उसे सरपंच बनाया।
- मैं उसे बहिन मानता हूँ।
- हम उसे ईमानदार समझते हैं।

**पहचान** – अपूर्ण सकर्मक क्रिया की श्रेणी में चयन (बनाना), चुनना, मानना, समझना आदि क्रियाएँ वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होती हैं।

**(ii) पूर्ण सकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया के साथ केवल कर्म की ही आवश्यकता पड़ती है, अन्य किसी पूरक शब्द की नहीं, वहाँ पूर्ण सकर्मक क्रिया होती है।

**जैसे –**

- बच्चा खेल रहा है। (क्रिकेट)
- तुमने जीता। (मैच)
- तुमने रोका। (रास्ता)

**पहचान** – वाक्य में प्रयुक्त किसी क्रिया वाचक शब्द से पहले क्या शब्द से प्रश्न करने पर यदि उसका कोई काल्पनिक उत्तर प्राप्त हो जाता है, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया पूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती है। **पूर्ण सकर्मक क्रिया के पुनः दो उपभेद कर दिये जाते हैं।**

- (i) एक कर्मक क्रिया
- (ii) द्वि कर्मक क्रिया

**(i) एक कर्मक क्रिया**

जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं।

**जैसे –** 'माँ पढ़ रही हैं।' (यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म पढ़ना हो रहा है।)

- उसने सेब व संतरे खरीदे।

} कर्म खरीदना

- मैंने गाड़ी खरीदी।

**पहचान** – यदि किसी वाक्य में केवल क्या प्रश्न का ही उत्तर प्राप्त हो रहा हो, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया एक कर्मक क्रिया मानी जाती है।

**क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद**

**अपूर्ण क्रिया** –

कुछ क्रियाओं का अपने-आप में अर्थ पूर्ण ही नहीं होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते हैं, अर्थात् क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे—

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है। ('मूर्ख'—विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नहीं होगा।)
- अशोक जी हमारे गुरु थे। (गुरु—संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नहीं होता।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों में प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरु—दोनों संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य में



पूर्णता नहीं आती। ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते हैं, जो विशेषण और संज्ञा दोनों ही हो सकते हैं।

### पूर्ण क्रिया –

जिस क्रिया-पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप में गैर-क्रियापद (संज्ञा-विशेषण) की आवश्यकता नहीं हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते हैं, जैसे—

1. लडका सोता है।
2. लडका पढता है।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है। ये दोनों पद क्रियापद ही हैं। अतः ये पूर्ण क्रियाएँ हैं।

### (ii) द्वि कर्मक क्रिया

जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो, उसे द्वि कर्मक क्रिया कहते हैं।

**जैसे** – अध्यापक छात्रों को कम्प्यूटर सिखा रहे हैं।

क्या सिखा रहें हैं? – कम्प्यूटर, किसे सिखा रहे हैं? (छात्रों को) (छात्र सीख रहे हैं) इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

- सुमन अपनी बहन को हिंदी सिखाती हैं।
- अध्यापक ने छात्रों को हिंदी पढ़ाई।

**पहचान** – जब किसी वाक्य में किसे, क्या, किसको इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो रहें हो, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया द्विकर्मक क्रिया मानी जाती है।

- द्विकर्मक क्रिया में प्रथम कर्म अप्राणीवाचक (निर्जीव) तथा द्वितीय कर्म प्राणीवाचक (सजीव) होगा।

**ध्यान देने योग्य बातें** – हिंदी में निम्न सोलह क्रियाएँ ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनके साथ दोनों कर्म प्रयुक्त किये जाते हैं। अतः इन्हें नित्य द्विकर्मक क्रिया माना जाता है।

- |               |              |
|---------------|--------------|
| 1. दुहना      | 2. माँगना    |
| 3. पकाना      | 4. सजा देना  |
| 5. रोकना      | 6. पूँछना    |
| 7. चुनना      | 8. कहना      |
| 9. उपदेश देना | 10. जीतना    |
| 11. मथना      | 12. चुराना   |
| 13. ले जाना   | 14. हरण करना |
| 15. खिंचना    | 16. ढोना     |

### क्रिया की संरचना के आधार पर भेद

#### प्रेरणार्थक क्रिया

जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती



है। यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है। प्रेरणार्थक क्रियाओं में 'वा' लगता है। सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया।

**नोट** – इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया, अतः यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया है।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए।
  - सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया।
  - मोहन ने माली से दूब कटवाई।
- सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती हैं।

### मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने में सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे –

- मैं गया हुआ था। (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है।)
- सुरेश सुन रहा था। (सुन- मुख्य क्रिया है तथा रहा था- सहायक क्रियाएँ )

### नामधातु क्रिया

जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत में प्रत्यय जोड़ने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नाम धातु क्रिया होती है। जैसे –

- सेठ ने मकान हथियाया। (हाथ-संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया। (फिल्म-संज्ञापद)
- लडकी बतियाई। (बात संज्ञापद)

**हाथ (संज्ञा)** – हथिया (नाम धातु) हथियाना (क्रिया)

अपना (सर्वनाम) – अपना (नाम धातु) अपनाना (क्रिया)

**जैसे** – रोहित, सुनीता के विवाह की जिम्मेदारी को अपना चुका है।

**संज्ञा से निर्मित नामधातु** सर्वनाम से निर्मित नामधातु

हाथ	– हथियाना	अपना	– अपनाना
लाज	– लज्जाना	<b>विशेषण से निर्मित नामधातु</b>	
बात	– बतियाना	ठण्डा	– ठण्डाना
लात	– लतियाना	साठ	– सठियाना
रंग	– रंगना	गर्म	– गर्माना
शर्म	– शर्माना		

### पूर्वकालिक क्रिया

जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर उसी पल दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। पूर्वकालिक क्रिया के अंत में कर लगता है— सोकर, उठकर, जाकर आदि।

- बच्चे दूध पीकर सो गए।  
(सोने से पहले दूध पीया।)

- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया।
  - रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया।
- लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य में पहली क्रिया पूर्वकालिक नहीं है, बल्कि दोनों ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ हैं क्योंकि दोनों क्रियाएँ दो अलग-अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ हैं।

### तात्कालिक क्रिया

यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है। इसमें और मुख्य क्रिया में समय का अंतर नहीं होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया।
- वह नहाते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया।

### संयुक्त क्रिया

जब दो या दो से अधिक क्रिया-धातुओं के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। संयुक्त क्रिया में कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे –

- वह खाना खा चुका होगा।
- दीक्षा लिखा करती होगी।
- पानी बरसने लगा है।
- मैं यहाँ रोज आ जाया करता हूँ।
- दोपहर में लोग सो रहे होते हैं।

इन सभी वाक्यों में पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ हैं और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद-समूह संयुक्त क्रियाएँ हैं। सहायक क्रिया एक भी हो सकती है। (पढ़ता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों में है।

**कृदन्त क्रिया** – क्रिया शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्यय 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं तथा कृत प्रत्यय के योग से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं। क्रिया शब्दों के अन्त में प्रत्यय योग से बनी क्रिया कृदन्त क्रिया कहलाती हैं।

क्रिया	–	कृदन्त क्रिया
लिख	–	लिखना, लिखता, लिखकर
चल	–	चलना, चलता, चलकर

### विशेष

- (1) यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त कोई क्रिया स्वतः घटित हो रही हो तो वहाँ उस क्रिया को अकर्मक क्रिया माना जाता है –
- जैसे – पेड़ से पत्ता गिर रहा है।  
बूंद-बूंद से घड़ा भरता है।

- (2) यदि किसी वाक्य में गत्यार्थक क्रिया का (आना, जाना, चलना) का प्रयोग हो रहा है एवं उसके साथ वाक्य में आने/जाने/चलने का स्थानवाचक शब्द भी लिखा हो तो वहाँ इन क्रियाओं का सकर्मक माना जाता है।

जैसे – बच्चा घर गया।  
वह स्कूल आ रही है।

### काल के आधार पर क्रिया

जिस काल के अनुसार क्रिया सम्पन्न होती है, उसके अनुसार क्रिया के **तीन भेद** हैं।

1. भूतकालिक क्रिया
2. वर्तमान कालिक क्रिया
3. भविष्यत् कालिक क्रिया

**1. भूतकालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिससे बीते समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, भूतकालिक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- वह विद्यालय चला गया।
- उसने बहुत सुंदर गीत गाया।

**2. वर्तमान कालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिसमें वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- अनुष्का अखबार पढ़ रही हैं।
- अनिल हॉकी खेल रहा हैं।
- सुमित खाना खा रहा हैं।

**3. भविष्यत् कालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे –

- रेखा द्वितीय श्रेणी अध्यापक परीक्षा की तैयारी करेगी।
- हरीश दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेगा।
- कविता सर्दी की छुट्टियों में ननिहाल जाएगी।

### अन्य क्रियाएँ

**1. सामान्य क्रिया** – जब किसी वाक्य में एक ही धातु से बनी हुई किसी अकेले क्रिया का प्रयोग हो रहा हो, तो वहाँ वह सामान्य क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- राकेश दिल्ली गया।
- सुमन खाना बनाएगी।
- रेखा ने गीत गाया।

**2. सजातीय क्रियाएँ** – जिस क्रिया के साथ उससे बनी हुई भाववाचक संज्ञा का कर्म के रूप में प्रयोग होता है, उसे सजातीय क्रिया कहते हैं।

**अर्थात्** – जब किसी वाक्य में कर्म एवं क्रिया पद दोनों एक ही धातु के बने होते हैं, वहाँ प्रयुक्त क्रिया सजातीय क्रिया कहलाती है।

जैसे –

- राजू कई खेल-खेलता है।
- सीता मधुर हँसी-हँसती है।
- कृष्ण अच्छी चाल-चलता है।

**3. अनुकरणात्मक क्रिया** – किसी ध्वनि (आवाज/बोली) के अनुकरण पर जो क्रिया बनती है, उसे अनुकरणात्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे –

- बकरी की आवाज – में-में से मिमियाना
- तोते की आवाज – टें-टें से टिटियाना
- हवा की आवाज – सन-सन से सनसनाना

**पक्षियों की आवाजें**

कूकना (कू-कू)	–	कोयल
रँभाना	–	गाय
कुकड़ू-कुकड़ू	–	मुर्गा
डकारना	–	साँड
गुटरगूँ	–	कबूतर
खोखियाना	–	भालू
काँव-काँव	–	कौआ
हिनहिनाना	–	घोड़ा
भिन्न-भिन्नाना	–	मक्खी
भौंकना	–	कुत्ता
झंकरना (झीं-झीं)	–	झींगुर
दहाड़ना	–	शेर
गुनगुनाना	–	भंवरा
चिंघाड़ना	–	हाथी
भनभनाना	–	मच्छर
बलबलाना	–	ऊँट

**क्रिया के संबंध में वाच्य**

**वाच्य** – वाच्य क्रिया का रूपांतरण है, जिसके द्वारा यह पता चलता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है।

**वाच्य के भेद** – वाच्य के तीन भेद होते हैं।

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

**1. कर्तृवाच्य** – जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता है, वह कर्तृवाच्य कहलाता है।

जैसे –

- राम ने खाना खाया।
- वह शहर गया।
- रमा हँसती है।

**नोट** – कर्तृवाच्य सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाओं से बनता है।

**2. कर्मवाच्य** – वह वाच्य जिसमें कर्म की प्रधानता का बोध हो, कर्मवाच्य कहलाता है।

जैसे –

- गाना गाया गया।
- पेड़ काटा गया।
- पुस्तक लिखी गई।

**नोट** – कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया से बनता है।

**3. भाववाच्य** – जिस वाक्य में भाव या क्रिया की प्रधानता हो, वह भाववाच्य कहलाता है।

जैसे –

- सुरेश से चला नहीं जाता।
- मुझसे दौड़ा नहीं जाता।
- कमला से हँसा नहीं जाता।

**नोट** – भाववाच्य अकर्मक क्रिया से बनता है।

**वाच्य के प्रयोग**

वाक्य में क्रिया द्वारा कर्ता, कर्म, भाव का अनुसरण करने के कारण, वाच्य प्रयोग को **तीन भागों** में बाँटा गया है –

1. कर्तरि प्रयोग
2. कर्मणी प्रयोग
3. भावे प्रयोग

**1. कर्तरि प्रयोग** – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हों, तब कर्तरि प्रयोग होता है।

जैसे –

- राम आम खाता है।
- श्याम अखबार पढ़ता है।



**2. कर्मणी प्रयोग** – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हो, तब कर्मणी प्रयोग होता है।

**जैसे –**

- विमला ने किताब पढ़ी।
- मुकेश ने गीत गाया।
- लड़की द्वारा पत्र को पढ़ा गया।

**3. भावे प्रयोग** – जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार न होकर सदैव पुल्लिंग, एकवचन, अन्य पुरुष में हो, तब भावे प्रयोग होता है।

**जैसे –**

- कमल से दौड़ा नहीं जाता।
- सोनू से हँसा नहीं जाता।
- मुझसे रोया नहीं जाता।
- पक्षियों से उड़ा नहीं जाता।

### क्रिया की वृत्ति

वृत्ति का षाब्दिक अर्थ – मनःस्थिति या मूड

क्रिया के जिस रूप द्वारा लेखक या वक्ता के उद्देश्य/मंतव्य, मनःस्थिति का पता चलता है, वह क्रिया वृत्ति कहलाता है।

**वृत्ति के भेद – (7)**

**(i) संदेहार्थक वृत्ति** – क्रिया के जिस रूप से लेखक के मन में उत्पन्न होने वाले संदेह/शंका का भाव प्रकट होता है, तो वह संदेहार्थक वृत्ति कहलाती है।

**जैसे –**

- संतोष गाँव पहुँच गई होगी।
- भावेश पत्र लिख रहा होगा।
- रमेश ने खाना खा लिया होगा।

**(ii) संभावनार्थक वृत्ति** – जिस वृत्ति से किसी क्रिया के भविष्य में हो सकने के बारे में पता चलता है, उसे संभावनार्थक वृत्ति कहते हैं।

**जैसे –**

- आप अच्छे वक्ता बन सकते हों।
- शायद कल बारिश आए।
- भारत-पाकिस्तान के बीच होने वाला क्रिकेट मैच रुक सकता है।
- पिताजी शाम को यहाँ आ सकते हैं।

**(iii) आज्ञार्थक वृत्ति** – यदि किसी वाक्य में आज्ञा/आदेश/आदेश, अनुरोध, निषेध, चेतावनी, प्रार्थना आदि का बोध हो, वह आज्ञार्थक वृत्ति कहलाता है।

**जैसे –**

- अजय तुम यहाँ से चले जाओ। (आज्ञा)
- रेखा इधर आओ। (आदेश)
- मेरा काम जरूर कर दीजिएगा। (अनुरोध)
- आप मुझे अपनी पुस्तक दे सकेंगे। (निवेदन)
- तुम जल्दी चले जाना नहीं तो गाड़ी निकल जाएगी। (चेतावनी)

**(iv) संकेतार्थक वृत्ति** – यदि किसी वाक्य में संकेत के भाव प्रकट हो, तो वहाँ संकेतार्थक वृत्ति होगी।

**जैसे –**

- बारिश होगी तो हम भी पिकनिक पर चलेंगे।
- यदि तुम पढ़ते तो पास हो जाते।
- छुट्टी होती तो हम गाँव चले जाते।

**(v) निश्चयार्थक वृत्ति** – निश्चयार्थक वृत्ति में वक्ता की निश्चित भाव की मानसिक अभिवृत्ति का पता चलता है।

**जैसे –**

- मेरे पिताजी बहुत मेहनती हैं।
- उसने अपना कार्य कर लिया है।
- अब गाड़ी जा चुकी है।
- सोहन अच्छा वक्ता है।

**(vi) इच्छार्थक वृत्ति** – इस वृत्ति में वक्ता की इच्छा, वरदान, अभिशाप आदि का पता चलता है।

**जैसे –**

- आपकी यात्रा मंगलमय हो।
- बेटे जल्दी ही तुम्हारी नौकरी लग जाए।
- भगवान तुम्हें नरक में डाले।
- भगवान सबका भला करे।

**(vii) प्रश्नार्थक वृत्ति** – जब वक्ता के मन में जिज्ञासा हो और वह उसको शांत करने के लिए प्रश्न करें तो वह प्रश्नार्थक वृत्ति कहलाती है।

**जैसे –**

- यह किताब कितने दिन में बन जायेगी।
- अब मुझे किस परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए।
- आपका जन्मदिन कब है?
- आपका नाम क्या है?

### क्रिया के पक्ष

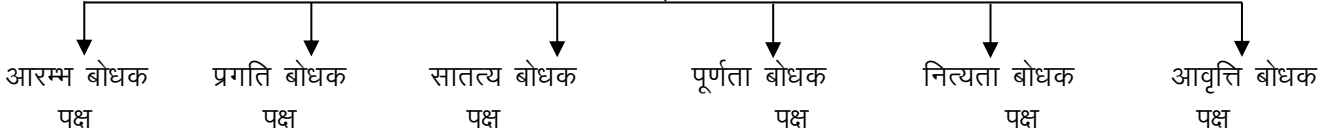
**पक्ष** – हर कार्य किसी कालावधि के बीच होता है, जो आरंभ से लेकर अन्त तक फैला हुआ होता है। इस क्रिया

में क्रिया के घटित होने के विभिन्न पहलुओं, प्रतिक्रियाओं को देखना पक्ष कहलाता है।

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के होने की प्रक्रियागत अवस्था का बोध होता है, वह पक्ष कहलाता है।

**पक्ष के भेद** – पक्ष के मुख्यतः 6 भेद होते हैं।

### पक्ष के भेद



**1. आरम्भ बोधक पक्ष** – क्रिया का वह रूप जिससे किसी कार्य के आरम्भ होने का बोध हों, वह आरम्भबोधक पक्ष कहलाता है।

**जैसे –**

- अतुल स्कूल जाने लगा है।
- आजकल अवनी भी पढ़ने लगी है।
- नवीन बोलने लगा है।
- साक्षी पुस्तक पढ़ने लगी है।

**2. प्रगति बोधक पक्ष** – यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त क्रिया में बढ़ोतरी या वृद्धि होने का भाव प्रकट हो तो वहाँ प्रगति बोधक पक्ष माना जाता है।

**जैसे –**

- रीतिका पुस्तक पढ़ती ही जा रही थी।
- मेलों में भीड़ बढ़ती ही जा रही थी।
- वर्षा होती ही जा रही थी।

**3. सातत्य बोधक पक्ष** – क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के निरंतर रूप से चलते रहने का संकेत मिलता है। यह निरंतरता वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल किसी में हो सकती है।

**जैसे –**

- शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहे थे।
- श्याम पुस्तक पढ़ रहा है।
- मानसी लिख रही है।

**4. पूर्णता बोधक पक्ष** – क्रिया के जिस रूप द्वारा कार्य के पूर्ण हो जाने का बोध हो, वहाँ पूर्णता बोधक पक्ष माना है।

**जैसे –**

- स्नेहा स्नान कर चुकी है।
- गाड़ी जा चुकी है।
- निराला ने पुस्तक पढ़ ली है।

**5. नित्यता बोधक पक्ष** – क्रिया के जिस रूप द्वारा किसी कार्य के नित्य होने का बोध होता है, वहाँ नित्यता बोधक पक्ष माना जाता है। क्रिया पहले भी होती थी, अभी भी होती है और आगे भी होती रहेगा। **नित्यता बोधक पक्ष को अपूर्णता बोधक पक्ष भी कहा जाता है।**

**जैसे –**

- मेरे पिताजी किसान हैं।
- सूर्य पूर्व दिशा से उदय होता है।
- सूर्यास्त के समय आसमान में लालिमा छा जाती है।

**6. आवृत्ति बोधक पक्ष** – जब किसी वाक्य में एक ही कार्य के बार-बार घटित होने का बोध होता है तो वहाँ आवृत्ति बोधक पक्ष माना जाता है।

**जैसे –**

- डाकिया पत्रों का वितरण करता है।
- आरती स्कूल जाती है। (रोजाना)
- होली पर सब लोग घरों की सफाई करते हैं। (हर बार)

**नोट – आवृत्ति बोधक पक्ष को अभ्यास बोधक पक्ष भी कहा जाता है।**



## संधि



### संधि का अर्थ—मिलान

### संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

#### जैसे –

प्रत्येक	–	प्रति + एक
विद्यालय	–	विद्या + आलय
जगदीश	–	जगत + ईश
आशीर्वाद	–	आशीः + वाद

### संधि की परिभाषा

#### कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास-पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते हैं।

### किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास-पास आते हैं तो कभी-कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

### संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते हैं। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

#### जैसे—

वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
रमा	+	ईश	=	रमेश
आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ। संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

#### जैसे—

शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

### संधि के भेद

स्वर संधि	व्यंजन संधि	विसर्ग संधि
(स्वर + स्वर का मेल) महा + आत्मा (आ + आ)	स्वर + व्यंजन → परि + छेद (इ + छ) व्यंजन + स्वर → दिक् + अम्बर (क् + अ) व्यंजन + व्यंजन → सत् + वाणी (त् + व)	विसर्ग + स्वर → मनः + अविराम (: + अ) विसर्ग + व्यंजन → तपः + वन (: + व)

### 1. स्वर संधि

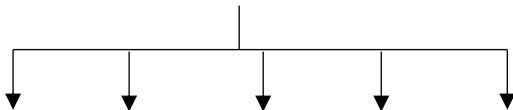
स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होने को ही स्वर संधि कहा जाता है।



जैसे— विद्यार्थी – विद्या + अर्थी  
आ + अ = आ

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते हैं—

#### स्वर संधि के भेद



दीर्घ संधि गुण संधि वृद्धि संधि यण संधि अयादि संधि

#### (i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, के बाद वे ही (अर्थात् समान) लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ऋ हो जाते हैं।  
(अ + अ = आ)



अ + अ = आ	(i) युग + अन्तर = युगान्तर युग् अ + अन्तर युगान्तर युग् आ न्तर युग् अ + अन्तर युग + अन्तर	(ii) स्व + अर्थ = स्वार्थ स्व् अ + अर्थ आ स्व् आ र्थ स्वार्थ
अ + आ = आ	(i) हिम + आलय = हिमालय हिम् अ + आ लय आ हिम् आ लय हिमालय	(ii) गमन + आगमन = गमनागमन गमन् अ + आगमन आ गमन् आ गमन गमना गमन
आ + अ = आ	(i) तथा + अपि = तथापि तथ् आ + अ पि आ त थ् आ पि तथापि	(ii) महा + अमात्य = महामात्य मह् आ + अमात्य आ म ह् आ मात्य महामात्य
आ + आ = आ	(i) प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद प्रेरण् आ + आ स्पद आ प्रेरण् आ स्पद प्रेरणास्पद	(ii) चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय चिकित्स् आ + आलय आ चिकित्स् आ लय चिकित्सालय
इ + इ = ई	(i) अति + इव = अतीव अत् + इव ई अत् + ई व अतीव	(ii) कवि + इन्द्र = कवीन्द्र क व् इ + इन्द्र ई क व् ई न्द्र कवीन्द्र
इ + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा प्रत् इ + ईक्षा ई प्र त् ई क्षा प्रतीक्षा	
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र मह् ई + इन्द्र ई मह् ई न्द्र महीन्द्र	
ई + ई = ई	नारी + ईश्वर = नारीश्वर ना र् ई + ईश्वर नार् ई श्वर नारीश्वर	
उ + उ = ऊ	गुरु + उपदेश = गुरुपदेश गुर् उ + उपदेश ऊ	

	गुरु + ऊ पदेश गुरुपदेश	
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ल घ उ + ऊर्मि <div style="text-align: center;"> <math>\underbrace{\hspace{1.5cm}}</math>            ऊ            लघु ऊ र्मि            लघूर्मि         </div>	
ऊ + ऊ = ऊ	सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि सरयू ऊ + ऊर्मि <div style="text-align: center;"> <math>\underbrace{\hspace{1.5cm}}</math>            ऊ            सरयू उ र्मि            सरयूर्मि         </div>	
ऋ + ऋ = ऋ	पितृ + ऋण = पितृण पितृ ऋ + ऋण <div style="text-align: center;"> <math>\underbrace{\hspace{1.5cm}}</math>            ऋ            पितृ ऋ ण            पितृण         </div>	

नोट – ऐसे ऋ वाली संधियों से बने दीर्घ ऋ वाले शब्द हिन्दी में प्रचलित नहीं हैं।

### दीर्घ संधि के उदाहरण

अन्नाभाव	–	अन्न + अभाव	अ + अ = आ	परम + अर्थ = परमार्थ
भोजनालय	–	भोजन + आलय	अ + आ = आ	
विद्यार्थी	–	विद्या + अर्थी	आ + अ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
गिरीन्द्र	–	गिरि + इन्द्र	इ + इ = ई	
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
गिरीश	–	गिरि + ईश	इ + ई = ई	
रजनीश	–	रजनी + ईश	ई + ई = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	मुनी + इन्द्र = मुनीन्द्र
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	अभिप्सा = अभि + ईप्सा
रामावतार	–	राम + अवतार	अ + अ = आ	भय + आक्रांत = भयक्रांत
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	स्नेह + आविष्ट = स्नेहाविष्ट
रामायण	–	राम + अयन	अ + अ = आ	
धर्मार्धर्म	–	धर्म + अधर्म	अ + अ = आ	
पराधीन	–	पर + अधीन	अ + अ = आ	
पुण्डरीकाक्ष	–	पुण्डरिक + अक्ष	अ + अ = आ	
दैत्यारि	–	दैत्य + अरि	अ + अ = आ	
शताब्दी	–	शत + अब्दी	अ + अ = आ	
धर्मार्थ	–	धर्म + अर्थ	अ + अ = आ	
मुरारि	–	मुर + अरि	अ + अ = आ	

नीलाम्बर	-	नील + अम्बर	अ + अ = आ	
परमार्थ	-	परम + अर्थ	अ + अ = आ	
रुद्राक्ष	-	रुद्र + अक्ष	अ + अ = आ	
स्वाधीन	-	स्व + अधीन	अ + अ = आ	
गीताजली	-	गीत + अंजली	अ + अ = आ	
दीपावली	-	दीप + अवली	अ + अ = आ	
प्रार्थी	-	प्र + अर्थी	अ + अ = आ	
छिद्रान्वेषी	-	छिद्र + अन्वेषी	अ + अ = आ	
मूल्यांकन	-	मूल्य + अंकन	अ + अ = आ	
अन्त्याक्षरी	-	अंत्य + अक्षरी	अ + अ = आ	
सापेक्ष	-	स + अपेक्ष	अ + अ = आ	
अभयारण्य	-	अभय + अरण्य	अ + अ = आ	
सत्यार्थी	-	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	
नारायण	-	नार + अयन	अ + अ = आ	कंटक + आकीर्ण = कंटाकाकीर्ण
परमात्मा	-	परम + आत्मा	अ + आ = आ	
पदावलि	-	पद + अवलि	अ + आ = आ	
रत्नाकर	-	रत्न + आकर	अ + आ = आ	
निगमागमन	-	निगम + आगमन	अ + आ = आ	
पद्माकर	-	पद्म + आकर	अ + आ = आ	
शरणागत	-	शरण + आगत	अ + आ = आ	
सत्याग्रह	-	सत्य + आग्रह	अ + आ = आ	
विद्याध्ययन	-	विद्या + अध्ययन	आ + अ = आ	
परीक्षार्थी	-	परीक्षा + अर्थी	आ + अ = आ	
रेखांकित	-	रेखा + अंकित	आ + अ = आ	
मुक्तावली	-	मुक्ता + अवली	आ + अ = आ	
दावानल	-	दावा + अनल	आ + अ = आ	
तथापि	-	तथा + अपि	आ + अ = आ	
महाशय	-	महा + आशय	आ + आ = आ	
द्राक्षासव	-	द्राक्षा + आसव	आ + आ = आ	
विद्यालय	-	विद्या + आलय	आ + आ = आ	
महात्मा	-	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
प्रेरणास्पद	-	प्रेरणा + आस्पद	आ + आ = आ	
कवीन्द्र	-	कवि + इन्द्र	इ + इ = ई	
अतिव	-	अति + इव	इ + इ = ई	
अभीष्ट	-	अभि + इष्ट	इ + इ = ई	
अतीत	-	अति + इत	इ + ई = ई	
महीन्द्र	-	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
महतीच्छा	-	महती + इच्छा	ई + इ = ई	